3, 71, 438
प्रसारण संख्या का विश्व कीर्तिमान रचने वाली
भारत की एकमात्र बाल पत्रिका

सर्वाधिक प्रसारित हिन्दी बाल मासिक
देवपुत्र

बाल शहीदों की गौरव गाथा।

हरिगोपाल बल

●रविचंद्र गुप्ता

हरिगोपाल बल का जन्म सन् १९१७ में कानूनगोपरा चटगांव (बंगलादेश) में हुआ था। वह बचपन से ही क्रूर और उद्दंड स्वभाव का बालक था। बचपन से ही क्रांतिकारी स्वभाव के कारण उससे बड़े-बड़े गुंडे भी काँपते थे। इसीलिए लोग उसे 'टेंगरा' कहकर पुकारते थे। उसका बड़ा भाई लोकनाथ बल सूर्यसेन की 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी ' का सदस्य था। सूर्यसेन ने चटगाँव से ब्रिटिश सत्ता समाप्त करने हेतु वहाँ के शस्त्रागार पर आक्रमण की योजना बनाई। हरिगोपाल स्वभाव से कैसा भी था लेकिन देशभक्ति का प

आक्रमण के एक्शन में भाग लेने हेतु सूर्यसेन को तैयार कर लिया।

दिनांक १८ अप्रैल, १९३० को

चटगाँव का शस्त्रागार लूटने के कार्य में हरिगोपाल बल के चातुर्य और साहस की सभी ने सराहना की। २२ अप्रैल को लोकनाथ बल के नेतृत्व में पचास बाल सैनिकों ने ज

पर २००० अंग्रेज सैनिकों का बड़े साहस से मुकाबला किया। युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही पत्थरों की ओट लेते हुए हरिगोपाल पहाड़ी के आगे के छोर पर जा पहुँचा। उसने सबसे पहले फायरिंग चालू कर दी। पत्थरों की ओट से उसने एक-एक करके छः सैनिकों को धराशायी कर दिया। उत्साह में भरकर वह खड़ा हुआ और पहाड़ी के आगे के हिस्से की ओर जाने का प्रयास करने लगा। तभी उसका बड़ा भाई लोकनाथ बल चिल्लाया- ''नीचे बैठ...नीचे बैठ...।'' लेकिन तभी स्थान बदलते समय उसे शत्रु की गोली लगी। उसने पहाड़ी पर ही प्राण त्याग कर